Class. B.Com I
Subject. B.M.C
Paper I (S)
Topic - Management thought (Part I)
Lecture sequence 6
By. Dr C P Sahu
Marwari College, Darbhanga.

प्रबन्ध की विचारधारा - (भाग 1) (1)

मानवीय प्रयासों का समन्वय उतना ही पुराना है जितना कि मनुष्य। प्रबन्ध क्रिया का सूत्रपात उसी से हो गया जबसे मानव ने एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य आरम्भ किया।

प्राचीन काल में भी प्रबन्ध का प्रयोग होता था। 5,000 वर्ष पूर्व सुमेरियन सभ्यता में आधुनिक प्रबन्धकीय नियंत्रण का उदाहरण मिलता है। मिस्र के पिरामिडों से वहाँ की तकनीकी एवं प्रबन्धकीय क्षमता का पता लगता है। चीन में 1644 वर्ष पूर्व श्रम विभाजन के सिद्धान्त का प्रयोग किया था।

भारत में, कौटिल्य ने ~~अ~~ अर्थशास्त्र में नगरों तथा राज्य के प्रबन्ध के सिद्धान्तों का अवलोकन किया है। सिन्धु घाटी की सभ्यता से प्राप्त शिलालेखों से उस समय की प्रबन्धकीय क्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है। ~~वेदों~~ वेदों में भी प्रशासन व्यवस्था उस युग के प्रबन्ध के रूप को बतलाती है। रामायण एवं महाभारत के समय में प्रबन्धकीय क्षमता ~~के~~ देखे गये हैं।

बाइबल में भी प्रबन्ध सम्बन्धी बात उल्लेखनीय है। मध्य युग के औद्योगिक प्रबन्ध का ~~विकास~~ इतिहास, इंग्लैंड, फ्रांस तथा इटली में गिल्डों का इतिहास प्रचलित हुए।

• गिल्ड का तात्पर्य उन लोगों एवं कारीगरों की संस्थाओं से जो विभिन्न व्यापारों में लगे थे। उपभोक्ता के ~~हाथ~~ में परिवर्तन एवं आपसी दुश्मनी के कारण ~~पश्चात्~~ 15वीं शताब्दी में समाप्त हो गया।

इंग्लैंड ~~गिल्डों~~ की तरह भारत में भी जातीय पंचायतें थी। इसमें ~~व्यवसा~~ व्यवसाय का विभाजन जातीय आधार पर था।

इस काल में उत्पादन क्रिया सरल थी तथा उत्पादन छोटे पैमाने पर होता था। बाजार का क्षेत्र सीमित था। उत्पादक तथा ग्राहक का सीधा संबंध था। उद्योग का स्वामित्व-हस्तान्तरण पिता से पुत्र को होता था। पुत्र अपने पिता से ही उत्पादन की तकनीकी ~~तक~~ सीखता था। इस काल में परम्परागत प्रबन्ध का प्रचलन था।

<u>औद्योगिक क्रान्ति</u> - अठारवीं शताब्दी को औद्योगिक क्रान्ति का युग कहा जाता है। इस क्रान्ति से औद्योगिक क्रान्ति में परिवर्तन शुरु होने लगा। उत्पादन के क्षेत्र में मशीनों का बड़े पैमाने का प्रयोग होने लगा। जिससे बड़े पैमाने के उत्पादन को प्रोत्साहन मिला ~~जिसे~~ इसे कारखाना प्रणाली के नाम से जाने लगा।

Scanned with CamScanner

प्रबन्ध के विकास का श्रेष्ठ काल औद्योगिक क्रान्ति (2)
के बाद होता है।

~~प्रबन्धकीय~~ वैज्ञानिक प्रबन्ध विचारधारा -

F.W. Taylor को वैज्ञानिक प्रबन्ध का जन्मदाता कहा जाता है।
टेलर साहेब के अनुसार वैज्ञानिक प्रबन्ध का अर्थ किसी नये खोज से नहीं है बल्कि प्रबन्ध तत्वों के सर्वश्रेष्ठ संयोजन से है। उन्होंने केवल पुराने ज्ञान को ही सिद्धान्तों एवं नियमों के रूप में इस तरीके से संग्रहित, विश्लेषित एवं वर्गीकृत किया है कि उसे प्रबन्ध-विज्ञान का रूप हो गया।

प्रबन्ध के क्षेत्र में टेलर साहेब का योगदान -

(1) वैज्ञानिक विधि अपनाने पर बल - विज्ञान की तरह टेलर ने प्रबन्ध के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किये जैसे कि कच्चे माल को हटाने के प्रयोग, फावड़े का प्रयोग, धातु कटाई का प्रयोग तथा समय, थकान और गति ~~अध्ययनों~~ अध्ययनों की शुरुआत की। इन प्रयोगों के अध्ययनों के आधार पर ~~निष्कर्ष~~ निष्कर्षों को ~~प्रयोग~~ लागू किये।

Scanned with CamScanner

इस तरह टेलर ने कहा कि सर्वोत्तम कार्य का निष्पादन का (4)
आधार वैज्ञानिक प्रबन्ध है। किसी कार्य के अवलोकन प्रयोगीकरण
तथा मापन के अभाव में यह पता लगाना संभव नहीं है कि कार्य
की सर्वश्रेष्ठ विधि क्या है? तथा उसे किस प्रकार कम लागत पर
सम्पादित किया जा सकता है।

② **प्रेरणात्मक मजदूरी पद्धति** – जब कोई सहज कुशल श्रमिक
श्रमिक, आलसी श्रमिकों के साथ, कुछ दिन काम करता है, तब
उसे इस तर्क का उत्तर नहीं मिलता कि जब मैं से आधा काम
करते थे भी, आलसी व्यक्ति को मेरे बराबर मजदूरी मिलता
है तब मैं परिश्रम क्यों करूँ। इस समस्या के समाधान के लिए टेलर
अपना विचार प्रकट किये –

(i) प्रत्येक श्रमिक को उसकी योग्यता और कार्यक्षमता के आधार
कार्य का भार देना चाहिए।

(ii) प्रत्येक श्रमिक के लिए उतना माल उत्पन्न करना होगा जितना कि
श्रेष्ठतम श्रमिक कर सकता है।

(iii) प्रत्येक श्रमिक को, जो कि श्रेष्ठतम श्रमिक का कार्य करता है,
औसत मजदूरी 30% से 100% तक अधिक मजदूरी दिया जाय।

Scanned with CamScanner

...दिया जाय।

(3) **निष्पादन के प्रमापों का निर्धारण** -

समय अध्ययन - किसी कार्य को करने मे कर्मचारी द्वारा लगाये समय का माप किया जाता है। इस अध्ययन के अन्तर्गत आराम के लिए निकालने गये समय का भी अध्ययन किया जाता है। इस समय के आधार पर किसी कार्य मे लगने वाले समय का प्रमापित समय निर्धारित किया जाता है।

गति अध्ययन - गति अध्ययन का विश्लेषण करके आवश्यक गतियों का पता लगाया जाता है। इस गति अध्ययन के आधार पर काम मे होने वाली विभिन्न गति विधियों का प्रमापीकरण किया जाता है।

प्रमापीकरण वैज्ञानिक प्रबन्ध का प्रमुख अंग है। इसके अन्तर्गत कार्य की मात्रा, विधियों, समय, गति, मशीन, औजार एवं सामग्री इत्यादि के प्रमाप तय किये जाते हैं।

(4) **कार्य का वैज्ञानिक विभाजन** - प्रत्येक मजदूरों को वही कार्य दिया जाय जिसके लिए वह सबसे ज्यादा उपयुक्त हो। कार्य की अपेक्षाओं के अनुरूप योग्यता न रखने वाले से कार्य पूरा करने की आशा नहीं रखा जा सकता

इसलिए सही व्यक्ति को सही कार्य के सिद्धान्त का पालन करना (6)
चाहिए। इससे कार्यक्षमता बढ़ती है।

(5) **क्रियात्मक संगठन** = यदि किसी संगठन में श्रम-विभाजन तथा विशिष्टीकरण के सिद्धान्तों को व्यवहार में लागू करना है तो क्रियात्मक संगठन पद्धति को अपनाना जरूरी है। इस पद्धति में ~~कर्मचारियों~~ कार्यात्मक विशेषज्ञों का सीधा सम्पर्क होता है तथा प्रत्येक श्रमिक अपने विशेषज्ञों से आदेश तथा निर्देश प्राप्त करता है।

(6) **मानसिक क्रान्ति** - मानसिक क्रान्ति वैज्ञानिक प्रबन्ध का सार है। वैज्ञानिक प्रबन्ध सारभूत विचार द्विपक्षीय मानसिक क्रान्ति से है। जिससे कि श्रमिक अपने कार्य के प्रति, अपने साथी श्रमिकों के प्रति कर्मचारी एवं नियोक्ता के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सके। प्रबन्धकों को भी अपने सभी कर्मचारियों के प्रति उनकी दैनिक समस्याओं का समाधान के लिए आगे आये। इसके अभाव में पूरी मानसिक क्रान्ति का वैज्ञानिक प्रबन्ध ~~म~~ का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा।

वैज्ञानिक तथा नवीनतम मशीनों (कम्प्यूटर ~~कम्प्यूटर~~) तथा औजारों का प्रयोग तभी अच्छा परिणाम दे सकता है जबकि मालिक (7)
तथा श्रमिकों के आपस में सम्बन्ध अच्छा हो। इससे बीच मतभेद को भी दूर किया जा सके।

वैज्ञानिक प्रबन्ध की सबसे महत्वपूर्ण शर्त श्रमिकों तथा प्रबन्धकों के मानसिक प्रवृत्ति ~~को~~ में परिवर्तन लाना है। प्रबन्ध और कर्मचारी परम्परागत पद्धतियों के स्थान पर कम्प्यूटर प्रणाली का उपयोग करें। श्रमिक प्रबन्धकों में विश्वास रखे तथा प्रबन्धक श्रमिकों के प्रति हित का ध्यान रखे। जिससे श्रमिक एवं प्रबन्धक के बीच संघर्ष के स्थान पर सहयोग ~~एवं~~ विश्वास बढ़ेगा जिससे कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन कर अधिक से अधिक लाभ ~~कमा~~ होगा और अपने मालिकों को प्रसन्न करें साथ ही इस लाभ में से भी श्रमिकों को भी कुछ अंश प्राप्त हो सके जिससे वे मन लगाकर कार्य को कर सके।